बरेली मण्डल के स्ववित्त पोषित एंव सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी0एड0 पाठ्यक्रम के शिक्षण अभ्यास में प्रयुक्त सामग्री की स्थिति के क्रियान्वयन की स्थिति का अध्ययन

डॉ0 मधुप कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र विभाग), भारतीय महाविद्यालय, फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने बरेली मंडल के स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयो के शिक्षण अभ्यास में प्रयुक्त सहायक सामग्री के प्रयोग पर शोध किया है । शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयो में शिक्षकों के शिक्षण अभ्यास को प्रभावी बनाने के लिए सहायक सामग्री का प्रयोग भी आवश्यक होता है । सहायक सामग्री के माध्यम से पाठ योजना को रोचक एवं प्रभावशाली बनाया जाता है । जिससे छात्रों को सिखने में सरलता होती है । सहायक सामग्री छात्रों में चिंतन, मनन और अवबोध एवं कौशलत्मक योग्यता विकसित करनें में सहायता प्रदान करता है । प्रस्तुत प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने बी0,ड0 पाठ्यक्रम क्रियान्वयन मापनी का निर्माण किया । ं। स्ववित्त पोषित 13 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में से यादृच्छिक विधि से 7 महाविद्यालयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। चयनित इन सात महाविद्यालयों के बी0एड0 पाठ्यक्रम में अध्ययनरत 50% (350) प्रशिक्षणार्थियों तथा वित्तीय सहायता प्राप्त सभी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के लगभग 50% (210) प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। इनमें से 10 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रश्नावली को बिना पूर्ण रूप से भरे ही वापस कर दिया। फलतः वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों से मात्र 200 प्रशिक्षणार्थियों को ही अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। । प्रस्तुत शोध पत्र में आंकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात शोधार्थी ने पाया ंस्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण अभ्यास में सहायक सामग्री का प्रयोग कराया जाता था। स्ववित्त पोषित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में जहाँ प्रशिक्षणार्थी शिक्षण अभ्यास चार्ट, चित्र तथा वास्तविक पदार्थों को सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग करते थे, वहीं वित्तीय सहायता प्राप्त प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणार्थी शिक्षण अभ्यास में चार्ट और वास्तविक पदार्थों के साथ–साथ मॉडल भी सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग करते पाये गये।

संकेत शब्द :– *बरेली मण्डल, स्ववित्त पोषित, सहायता प्राप्त, बी0एड0 पाठ्यक्रम, शिक्षण अभ्यास, प्रयुक्त सहायक सामग्री ।*

प्रस्तावना :–

किसी भी राष्ट्र की महत्ता उस राष्ट्र के नागरिकों के गुणों पर आधारित होती है। नागरिकों के गुण मुख्य रूप से शिक्षा के गुण पर आधारित होते हैं। शिक्षा अच्छी प्रकार की तभी हो सकती है, जब शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण सम्बन्धी सुविधाओं अकादमिक वातावरण के साथ ही शिक्षण हेतु सुयोग्य, कर्मठ एवं समर्पित शिक्षक भी उपलब्ध हो।

शिक्षा की प्रक्रिया में तीन तत्व सम्मिलित होते हैं– शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम। शिक्षक, पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में ज्ञान, भाव या कौशल विकसित करने का प्रयास करता है, जो कि एक जटिल प्रक्रिया है तथा आदान–प्रदान के फलस्वरूप सम्पन्न होती है। **मौरिसन (सिंह, टी0 1980)** "अधिक परिपक्व व्यक्तित्व तथा कम परिपक्व व्यक्तित्व के मध्य गहन सम्पर्क, जिसमें बाद वाले को शिक्षा दी जाती है, शिक्षण कहा है।" इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके प्रारूप एवं परिचालन की व्यवस्था इसलिए की जाती है, जिससे विद्यार्थियों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाया जा सके। इस प्रकार शिक्षण सीखने को प्रभावित करने वाली प्रक्रिया है। प्रभावी शिक्षण हेतु जहाँ एक ओर पाठ्यक्रम का ऐसा होना आवश्यक है, जो विद्यार्थियों की अपेक्षाओं के अनुरूप हो, वहीं दूसरी ओर यह भी आवश्यक है कि शिक्षक योग्य कर्मठ एवं व्यवसाय के प्रति समर्पित हो। यहाँ यह ध्यातव्य है कि कर्मठ, सुयोग्य एवं व्यवसाय के प्रति समर्पित शिक्षकों के अभाव में अच्छी से अच्छी शिक्षा व्यवस्था का असफल होना अवश्यम्भावी है, क्योंकि शिक्षा जहाँ सामाजिक परिवर्तन का उपकरण है, वहीं श्किक सामाजिक परिवर्तन का अभिकर्ता इसलिए कहा गया है कि शिक्षक राष्ट्र के निर्माता हैं। निःसन्देह किसी भी राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की केन्द्रीय भूमिका होती है। इसीलिए **कोठारी कमीशन (1966, पृ0 1)** ने कहा है कि "भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है।" **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)**

में कहा गया है कि "किसी समाज में अध्यापकों के दर्जे से उनकी सांस्कृतिक–सामाजिक दृष्टि का पता लगता है। कहा गया है कि कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊँचा नहीं उठ सकता है।"

डा0 जाकिर हुसैन (1954, दी हिन्दुस्तान टाइम्स ऑफ बड़ौदा 10 जनवरी) ने भी शिक्षक को राष्ट्र निर्माण की धुरी माना है और कहा है कि वास्तव में शिक्षा का केन्द्र शिक्षक ही है। शिक्षा पद्धति की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है और राष्ट्र निर्माण भी।

एडम्स (1962) ने तो यहाँ तक कहा है कि– "शिक्षक उन्नतिशील समाज की रीढ़ है। समाज को उन्नति के शिखर पर अथवा गर्त के अन्धकूप में डालने की क्षमता शिक्षक के अलावा किसी में दृष्टव्य नहीं होती।"

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है। अच्छे शिक्षक के निर्माण के लिए आवश्यक है कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी0एड0 पाठ्यक्रम के शिक्षण अभ्यास में प्रयुक्त सामग्री के अन्तर्गत प्रशिक्षणार्थियों में नवीन उपागमों से सम्बन्धित ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्तियों का विकास हो सके।

अध्ययन का शीर्षक :

"बरेली मण्डल के स्ववित्त पोषित एंव सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी0एड0 पाठ्यक्रम के शिक्षण अभ्यास में प्रयुक्त सामग्री की स्थिति के क्रियान्वयन की स्थिति का अध्ययन"

पदों की परिभाषा :

1. बरेली मण्डल : प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने उ0प्र0 के बरेली मण्डल का चयन किया। इस मण्डल में बरेली, शाहजहाँपुर, बदायूँ और पीलीभीत जनपद हैं। इन जनपदों के सभी स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों को इस अध्ययन में शामिल किया गया है।

2. स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय : प्रस्तुत अध्ययन में स्ववित्त पोषित शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय से तात्पर्य उन महाविद्यालयों से है जिन्हे केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालय से किसी प्रकार का वित्तीय सहायता प्राप्त नहीं होती है और जो अपने निजी संसाधनों की सहायता से बी0एड0 पाठ्यक्रम को संचालित करते हैं।

3. सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय : प्रस्तुत अध्ययन में सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय से तात्पर्य उन संस्थाओं से है, जिन्हें केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालय द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

4. बी0एड0 पाठ्यक्रम क्रियान्वयन : बी0एड0 पाठ्यक्रम क्रियान्वयन की स्थिति से तात्पर्य यह है कि राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद एवं एम0जे0पी0 रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली के द्वारा निर्धारित एक वर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम को शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय किस प्रकार पूर्ण कराते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य :–

"बरेली मण्डल के स्ववित्त पोषित एंव सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी0एड0 पाठ्यक्रम के शिक्षण अभ्यास में प्रयुक्त सामग्री की स्थिति के क्रियान्वयन की स्थिति का अध्ययन"

परिकल्पना :

बरेली मण्डल के स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के बी0एड0 पाठ्यक्रम के शिक्षण अभ्यास में प्रयुक्त सामग्री की स्थिति में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की सीमाएं :

प्रस्तुत अध्ययन स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में बी0एड0 पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन की स्थिति की जानकारी से सम्बन्धित है। अतः संसाधनों की उपलब्धता की दृष्टिगत रखते हुए अध्ययन को निम्न बिन्दुओं तक सीमित रखा गया है–

- प्रस्तुत अध्ययन को उत्तर प्रदेश के बरेली मण्डल में स्थित शिक्षा महाविद्यालयों तक सीमित किया गया है।
- प्रस्तुत् अध्ययन में बरेली मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी आँचल के प्रशिक्षणार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में 550 प्रशिक्षणार्थियों तक ही सीमित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में स्ववित्त पोषित एवं सहायता प्राप्त शिक्षा महाविद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल संस्थागत प्रशिक्षणार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है। दूरस्थ शिक्षा से सम्बन्धित विद्यार्थियों को इस अध्ययन में स्थान नहीं दिया गया।

शोध विधि :

प्रत्येक अध्ययन की एक विशेष प्रकृति होती है। जिसके अनुसार ही शोध विधि का निर्धारण किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बरेली मण्डल के स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में बी0एड0 पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन की स्थिति का अध्ययन करना था। अतः प्रस्तुत अध्ययन में शोध की वर्णात्मक विधि को प्रयोग में लाया गया है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन बरेली मण्डल के प्रशिक्षणार्थियों से सम्बन्धित है। बरेली मण्डल में दो प्रकार शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएं हैं– (क) स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएं (ख) वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएं। स्ववित्त पोषित 13 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में से याद्च्छिक विधि से 7 महाविद्यालयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। चयनित इन सात महाविद्यालयों के बी0एड0 पाठ्यक्रम में अध्ययनरत 50% (350) प्रशिक्षणार्थियों तथा वित्तीय सहायता प्राप्त सभी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के लगभग 50% (210) प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। इनमें से 10 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रश्नावली को बिना पूर्ण रूप से भरे ही वापस कर दिया। फलतः वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों से मात्र 200 प्रशिक्षणार्थियों को ही अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

शोध उपकरण :–

विभिन्न संस्थाओं द्वारा उपलब्ध मानकीकृत व प्रकाशित उपकरणों की सूची देखने से यह स्पष्ट हुआ कि प्रस्तुत समस्या पर आधारित कोई भी शोध उपकरण उपलब्ध नहीं है। इस परिस्थिति व अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुये शोधकर्ता द्वारा बी0एड0 पाठ्यक्रम क्रियान्वयन मापनी निर्मित करने का निर्णय लिया गया। इस मापनी का निर्माण निम्न चरणों के अन्तर्गत सम्पन्न हुआ।

बी0एड0 पाठ्यक्रम क्रियान्वयन मापनी का निर्माण :–

इस उपकरण की रचना में निम्न सोपानों का अनुकरण किया गया।

1. योजना
2. एकांशों की रचना
3. एकांशों का संशोधन
4. मुद्रीकरण

बी0एड0 पाठ्यक्रम क्रियान्वयन मापनी में प्रश्नों के प्रकार

इस उपकरण को "बी0एड0 पाठ्यक्रम क्रियान्वयन मापनी" (प्रशिक्षणार्थियों के लिए) के नाम से छपवाया गया। प्रथम पृष्ठ पर प्रश्नावली का नाम, शोध निर्देशक एवं शोधकर्ता का नाम परिचय तथा निर्देश छपवाया गया दूसरे पृष्ठ से पाँचवें पृष्ठ तक प्रश्न हैं। जिनका विवरण निम्नवत है।

क्र0 सं0	बी0एड0 पाठ्यक्रम क्रियान्वयन मापनी में प्रश्नों के प्रकार	प्रश्न नम्बर
1.	प्रथम प्रकार (हाँ/नहीं)	3, 5, 7, 10, 15, 17, 19, 21, 22, 25, 26, 28, 32, 35, 37, 40, 41, 44, 47
2.	द्वितीय प्रकार (रिक्त स्थानों की पूर्ति)	1, 2, 6, 8, 11, 14, 18, 20, 27, 31, 38, 39
3.	तृतीय प्रकार (वक्तव्य)(सही के निशान)	4, 9, 12, 13, 16, 23, 24, 29, 30, 33, 34, 36, 42, 43, 45, 46, 48, 49

आंकडों का संकलन एवं व्यवस्थापन :–

अध्ययन हेतु प्रदत्त संकलन चयनित न्यादर्श पर उपकरण को प्रशासित करके प्राप्त किया गया। तत्पश्चात् फलांकन प्रविधियों को प्रयोग में लाकर प्रदत्तों को व्यवस्थित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन एवं व्यवस्थापन के लिए निम्न प्रक्रिया का अनुकरण किया गया।

उपकरण का प्रशासन :–

विश्वसनीय प्रदत्त संकलन के लिए शोधकर्ता ने सर्वप्रथम न्यादर्श के रूप में चयनित शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राचार्यों से सम्पर्क किया तथा रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग द्वारा प्रदत्त पत्र को देकर सहयोग हेतु अनुरोध किया गया। तत्पश्चात् प्राचार्य की अनुमति लेकर शिक्षक प्रशिक्षकों के माध्यम से शोधकर्त्ता द्वारा प्रशिक्षणार्थियों से सम्पर्क स्थापित किया गया तथा अध्ययन की सार्थकता के सम्बन्ध में उन्हें बताया गया तथा उनसे शोध के परिणामों की सफलता के लिए सहयोग देने का अनुरोध किया गया। तत्पश्चात् उनकों प्रश्नावली पूर्ति हेतु आवंटित की गयी। पूर्ति के पश्चात् प्रश्नावली उनसे प्राप्त कर ली गयी। इस अवधि में शोधकर्ता उनके सम्मुख कक्ष में उपस्थित रहा।

फलांकन तथा प्रदत्तों का सारणीयन :–

शोधकर्ता द्वारा प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रत्येक प्रश्न पर व्यक्त उत्तरों को टैली लगाकर उनका योग ज्ञात किया गया तथा अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप उनका सारणीयन किया गया। अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप प्रदत्तों का सारणीयन किया गया, जिससे निष्कर्षों को प्राप्त किया जा सके।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ :–

इस अध्ययन में संग्रहीत प्रदत्तों से निष्कर्ष निकालने हेतु प्रतिशत और काई वर्ग का प्रयोग किया गया है। काई वर्ग का मान मूल प्राप्तांकों के आधार पर किया गया है, प्रतिशत के आधार पर नहीं।

प्रतिशतता :–

प्रतिशत दो शब्दों प्रति और शत से मिलकर बना है। प्रति का अर्थ प्रत्येक के लिए और शत का अर्थ है 100 से। अतः प्रतिशत का अर्थ प्रत्येक सौ के लिए हुआ। इसे % चिन्ह से प्रदर्शित किया जाता है।

सूत्र :

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{प्राप्त संख्या}}{\text{कुल संख्या}} \times 100$$

काई वर्ग परीक्षण :–

काई शब्द ग्रीक भाषा से लिया गया है। इसे सर्वप्रथम कार्ल पीयर्सन ने (1900) में सांख्यिकी में प्रयुक्त किया था। इन्होंने आवृत्तियों के अन्तर के आधार पर अर्थापन का प्रयास किया था।

सूत्र :

$$\chi^2 = \Sigma\left[\frac{(f_0 - f_e)^2}{f_e}\right]$$

$$\text{काई वर्ग} = \left[\frac{(\text{प्राप्त आवर्त्ति} - \text{प्रत्याशित आवत्ति})^2}{\text{प्रत्याशित आवत्ति}}\right]$$

χ^2 = काई वर्ग

Σ = योग

f_0 = प्राप्त या मापित आवृत्ति

f_e = प्रत्याशित आवृत्ति

विश्लेशण, व्याख्या एवं परिणाम

इस अध्याय में अनुसंधान समस्या से सम्बन्धित न्यादर्श पर सम्बन्धित उपकरण के माध्यम से संकलित प्रदत्तों से निष्कर्ष निकालने हेतु आकड़ों को सारणीबद्ध किया गया तथा सांख्यिकीय गणना के उपरान्त निष्कर्ष पर पहुँचा गया है। जिसका वर्णन निम्नवत है :

तालिका संख्या 1
स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षण अभ्यास में प्रयुक्त सामग्री की स्थिति

क्र0 सं0	प्रश्न क्रमांक संख्या	स्ववित्त पोषित शिक्षण महाविद्यालय				वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालय				काई वर्ग
		प्रशिक्षणार्थी (350)				प्रशिक्षणार्थी (200)				
		हाँ		नहीं		हाँ		नहीं		
		संख्या	:	संख्या	:	संख्या	:	संख्या	:	
1.	प्र01 आपको शिक्षण अभ्यास में सहायक सामग्री का प्रयोग कराया जाता है।	350	100			186	93.00	14	7.00	25.13
2.	प्र02 आपको शिक्षण अभ्यास में किन–किन सहायक सामग्रियों का प्रयोग कराया जाता है?									
	1) मानचित्र	104	29.71			60	30.00			
	2) वास्तविक पदार्थ	227	64.85			97	48.50			
	3) ग्लोब	0	0.00			0	0.00			
	4) मॉडल	161	46.00			126	63.00			
	5) चित्र	251	71.71			83	41.50			31.45
	6) रेखाचित्र	132	37.71			37	18.50			
	7) पत्र–पत्रिकाएं	14	4.00			0	0.00			
	8) चार्ट	340	97.14			161	85.50			
	9) ग्राफ	18	5.14			8	4.00			
	10) स्लाइड	14	4.00			0	0.00			

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से विदित होता है कि स्ववित्त पोषित महाविद्यालय के सभी प्रशिक्षणार्थियों ने स्वीकार किया कि उनके महाविद्यालय द्वारा शिक्षण अभ्यास में सहायक सामग्री का प्रयोग कराया जाता है, जबकि वित्तीय सहायता प्राप्त प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्रशिक्षणरत 93ः प्रशिक्षणार्थियों ने ही इस बात से अपनी सहमति व्यक्त की। इस सम्बन्ध में काई वर्ग का मान 25.13 पाया गया, यह मान (1 डी0एफ0) 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः इस सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। इससे यह निष्कर्ष निकला कि स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों ने शिक्षण अभ्यास में सहायक सामग्री के प्रयोग के आधार पर अन्तर विद्यमान था। वित्तीय सहायता प्राप्त प्रशिक्षण महाविद्यालयों की अपेक्षा स्ववित्त पोषित संस्था के अधिक प्रशिक्षणार्थी, शिक्षण अभ्यास में सहायक सामग्री का प्रयोग करते पाये गये।

प्रश्न संख्या 2 के अवलोकन से विदित होता है कि स्ववित्त पोषित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सबसे अधिक 340 (97.14:) प्रशिक्षणार्थियों ने शिक्षण अभ्यास के दौरान चार्ट एवं द्वितीय स्थान पर 251 (71.71:) प्रशिक्षणार्थियों ने चित्र तथा तृतीय स्थान पर 227 (64.85:) प्रशिक्षणार्थियों ने वास्तविक पदार्थ का प्रयोग सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग कराये जाने की बात स्वीकार की। ग्राफ, स्लाइड तथा पत्र–पत्रिकाओं को शिक्षण अभ्यास के दौरान सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग कराये जाने की बात सबसे कम क्रमशः 18 (5.14:), 14 (4:) तथा 14 (4:) प्रशिक्षणार्थियों ने स्वीकार की। मॉडल 161 (46:), रेखाचित्र 132 (37.71:) तथा मानचित्र 104 (29.71:) प्रशिक्षणार्थियों ने शिक्षण अभ्यास में सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग कराये जाने की बात स्वीकार की। जबकि वित्तीय सहायता प्राप्त प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत सबसे अधिक 161 (85.50:) प्रशिक्षणार्थियों ने शिक्षण अभ्यास के दौरान सहायक सामग्री के रूप में चार्ट तथा द्वितीय स्थान पर 126 (63:) प्रशिक्षणार्थियों ने शिक्षण अभ्यास के दौरान मॉडल तथा तृतीय स्थान पर 97 (48.50:) प्रशिक्षणार्थियों ने शिक्षण अभ्यास के दौरान वास्तविक पदार्थ के प्रयोग कराये जाने की बात स्वीकार की। ग्राफ, रेखाचित्र तथा मानचित्र को शिक्षण अभ्यास के दौरान सहायक सामग्री के रूप में सबसे कम प्रयोग कराये जाने की बात क्रमशः 8(4:), 37 (18.50:) तथा 60 (30:) प्रशिक्षणार्थियों ने बतायी। 83 (41.50:) प्रशिक्षणार्थियों ने शिक्षण अभ्यास के दौरान चित्र के प्रयोग कराये जाने की बात स्वीकार की। पत्र–पत्रिकाओं तथा स्लाइड का प्रयोग कराये जाने की बात किसी भी प्रशिक्षणार्थी ने स्वीकार नहीं की। स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त दोनों ही प्रकार के महाविद्यालयों में से किसी में भी ग्लोब का प्रयोग शिक्षण अभ्यास के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को करने का अवसर उपलब्ध नहीं हुआ। सहायक सामग्रियों के प्रयोग कराये जाने के सम्बन्ध में दोनों ही प्रकार के महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षणार्थियों में काई वर्ग का मान 31.45 पाया गया, यह मान (10 डी0एफ0) 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः इस सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। इससे यह निष्कर्ष निकला कि स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षण अभ्यास के दौरान प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सहायक सामग्री के प्रयोग कराये जाने की स्थिति में अन्तर विद्यमान था।

निष्कर्ष :

स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण अभ्यास में सहायक सामग्री का प्रयोग कराया जाता था। स्ववित्त पोषित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में जहाँ प्रशिक्षणार्थी शिक्षण अभ्यास चार्ट, चित्र तथा वास्तविक पदार्थों को सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग करते थे, वहीं वित्तीय सहायता प्राप्त प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणार्थी शिक्षण अभ्यास में चार्ट और वास्तविक पदार्थों के साथ–साथ मॉडल भी सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग करते पाये गये।

भावी अध्ययन हेतु सुझाव :

भावी अध्ययन हेतु प्रस्तुत सुझाव निम्नवत हैं––

1. प्रस्तुत अध्ययन बरेली मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षणार्थियों से सम्बन्धित था। भावी शोधकर्ता अन्य क्षेत्र अथवा और व्यापक क्षेत्र पर बी0एड0 पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन की स्थिति का अध्ययन कर सकते हैं।
2. भावी शोध छात्र मौलिक क्षेत्र, पर्वतीय–मैदानी–तराई अथवा बुन्देलखण्ड, रूहेलखण्ड, उत्तराखण्ड, अवध के आधार पर बी0एड0 पाठ्यक्रम के क्रियान्वययन का अध्ययन कर सकते हैं।

3. भावी शोध छात्र ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में स्थित महाविद्यालयों में बी0एड0 पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन की स्थिति अध्ययन कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची :–

Adms, S., J., (1962). Evaluation of Educational Theory, McMilan Company, New York. P. 16.

अग्रवाल, बी0बी0 (1994). आधुनिक भारतीय शिक्षा और समस्यायें, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

बेस्ट, जे0 डब्ल्यू (2007). रिसर्च इन एजूकेशन, प्रेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, पृष्ठ 214।

ब्रजलाल (1995). सामान्य मानसिक योग्यता, यूनिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ 93–94।

गैरेट, एच.ई. (1998). शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, नोएड़ा।

गुडवार तथा स्केटस (1941). मैथाडालॉजी ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, आप्टलेन सेन्चुरी कं0, न्यूयार्क, पृष्ठ 103।

गुप्ता, एस0पी0(2004). भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृष्ठ 143।

मिचेल, जी0 डस्कन (1968). ए डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी, पटलडेज एण्ड केगान पाल, लन्दन।

एन0सी0ई0आर0टी0, (2001). विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अनुभव, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।

N.C.T.E. (1999). Teacher Education in Uttar Pradesh, N.C.T.E., New Delhi.

एन0सी0टी0ई0, (2001). अध्यापक शिक्षा में नीतिगत परिदृश्य, एन0सी0टी0ई0, नई दिल्ली।

पाण्डेय, के0पी0 (1998). शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

राय0, पी0एन0 (1993). अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पृष्ठ 289।

Rani, T. & Priadarsaini, J.R. (2004). *Educational Measurement and Evaluation.* Discovery Publishing House, New Delhi.

श्रीवास्तव, डी0एन0 एवं वर्मा, प्रीति (2006). मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकीय, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

त्यागी, जी0एस0डी0 एंव पाठक, पी0डी0 (2004). शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।